नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

कश्मीर में फिल्म महोत्सव का होना ऐतिहासिक घटना

जम्मू-कश्मीर में पहली बार अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का आयोजन केवल सांस्कृतिक आयोजन नहीं, बल्कि बदले हुए कश्मीर की तस्वीर का महत्वपूर्ण प्रतीक है. जिस घाटी में कभी आतंकियों के फरमान पर सिनेमाघरों के दरवाजे बंद हो जाते थे, ग्रेनेड हमलों में सिनेमाघर तबाह किए जाते थे और लोगों के सामान्य जीवन पर बंदूक की छाया रहती थी, वहां दुनिया के 41 देशों की फिल्मों का प्रदर्शन होना निश्चित रूप से ऐतिहासिक घटना है. यह बदलाव बताता है कि जम्मू-कश्मीर ने हिंसा और आतंकवाद के लंबे दौर से निकलकर सामान्य जीवन की ओर महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है. श्रीनगर में शुरू हुए पहले इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ जम्मू एंड कश्मीर में 135 फिल्मों की स्क्रीनिंग हो रही है. इनमें 60 विदेशी फिल्में हैं. महोत्सव के लिए 92 देशों से करीब 1,100 फिल्म प्रविष्टियां मिलना भी इस आयोजन के प्रति अंतरराष्ट्रीय फिल्म जगत की रुचि को दर्शाता है. श्रीनगर के अलावा जम्मू और गुलमर्ग में भी फिल्में प्रदर्शित की जा रही हैं. 'रंग-ए-सिनेमा' की थीम पर आयोजित यह महोत्सव जम्मू-कश्मीर को केवल प्राकृतिक सौंदर्य की भूमि के रूप में नहीं, बल्कि रचनात्मकता, संवाद और सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है.

दरअसल,जम्मू-कश्मीर में अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद सुरक्षा और विकास के मोर्चे पर जिस तरह के बदलाव हुए हैं, उनका प्रभाव सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भी दिखाई देने लगा है. आतंकवाद की चुनौती पूरी तरह समाप्त हो गई है, ऐसा दावा करना जल्दबाजी होगी, लेकिन यह भी तथ्य है कि हिंसा के दौर की तुलना में जनजीवन में व्यापक सामान्यता आई है. कभी जहां अलगाववाद और आतंकवाद की घटनाएं रोजमर्रा की जिंदगी पर हावी रहती थीं, वहां अब सांस्कृतिक आयोजन, पर्यटन गतिविधियां, निवेश और रोजगार की संभावनाएं चर्चा में हैं. फिल्म महोत्सव इसी परिवर्तन की एक प्रभावशाली अभिव्यक्ति है. कश्मीर का फिल्मों से पुराना रिश्ता रहा है. कभी इसकी खूबसूरत वादियां हिंदी फिल्मों की पसंदीदा लोकेशन हुआ करती थीं. आतंकवाद ने इस रिश्ते को तोड़ दिया था. अब फिल्म निर्माण के लिए अनुकूल वातावरण बनने से यह रिश्ता फिर मजबूत हो सकता है. स्थानीय कलाकारों, तकनीशियनों, लेखकों और युवा फिल्मकारों के लिए नए अवसर पैदा होंगे. मास्टर क्लास, पैनल चर्चा और संवाद सत्र स्थानीय प्रतिभाओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्म जगत से जोड़ने का माध्यम बन सकते हैं .इसका सीधा लाभ पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मिलेगा. देश-विदेश के फिल्मकार और सिनेमा प्रेमी जम्मू-कश्मीर आएंगे तो होटल, परिवहन, खानपान, हस्तशिल्प और अन्य स्थानीय कारोबारों को बढ़ावा मिलेगा. फिल्म शूटिंग बढ़ने से रोजगार के साथ जम्मू-कश्मीर की अर्थव्यवस्था में रचनात्मक क्षेत्र की हिस्सेदारी भी बढ़ सकती है .सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह महोत्सव दुनिया को कश्मीर का एक नया संदेश देगा. बंदूक और भय के बजाय कैमरा, संवाद और रचनात्मकता कश्मीर की पहचान बन सकती है .जम्मू-कश्मीर में अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव इस विश्वास को मजबूत करता है कि शांति केवल सड़कों पर सामान्य आवाजाही का नाम नहीं, बल्कि समाज में सपनों, कला और अभिव्यक्ति की वापसी भी है.

दिल्ली डायरी

लाल से नीले गमछे की ओर बढ़े सपाई

प्रवेश कुमार मिश्र

उत्तर प्रदेश की राजनीति में रंगों का यह नया बदलाव सिर्फ पहनावे का नहीं है बल्कि यह सत्ता प्राप्ति के लिए एक नई, गहरी व सोची-समझी रणनीतिक बिसात का प्रतीक है. सपाइयों का लाल से नीले गमछे की तरफ बढ़ना महज एक सतही कदम नहीं है, बल्कि 2027 के विधानसभा चुनाव को साधने की एक बड़ी सोशल इंजीनियरिंग है. नीला रंग जोड़कर अखिलेश यादव सीधे तौर पर आंबेडकरवादी और दलित मतदाताओं को अपने पीडीए यानी पिछड़ा, दलित व अल्पसंख्यक के दायरे में मजबूती से बांधना चाहते हैं. दरअसल इस बदलाव को कुछ लोग लोहियावादी और अंबेडकरवादी के वैचारिक मिलन की एक नई कोशिश के रूप में देख रहे हैं. जिसके जरिए सपाई रणनीतिकार बसपा के पारंपरिक वोट बैंक में सीधे सेंधमारी करना चाहते हैं. सपा छात्र सभा के नए ड्रेस कोड यानी नीली टी-शर्ट और जींस के बहाने युवाओं और जेन जी को एक आधुनिक और समावेशी पहचान देने का प्रयास किया जा रहा है, जिस पर साइकिल के साथ बाबा साहब की तस्वीर भी लगाई गई है. हालांकि सपाइयों की बदलते गमछे पर प्रतिक्रिया भी आरंभ हो गई है. भाजपा ने इसे दलितों को लुभाने का ढोंग कहा है जबकि बसपा के लोगों ने इसे राजनीतिक बहुरूपियापन करार दिया है. ऐसे में देखना दिलचस्प होगा कि सिर पर सजी पारंपरिक लाल टोपी के साथ गले का यह नया नीला गमछा जमीन पर कितना सियासी असर दिखाता है.

विपक्षी चेहरा विजय या राहुल ..... 2029 के लोकसभा चुनाव के लिए विपक्ष के प्रधानमंत्री चेहरे को लेकर दक्षिण भारत से शुरू हुई बहस ने अब दिल्ली के सियासी गलियारों में हलचल तेज कर दी है. यह बहस कांग्रेस नेता राहुल गांधी और तमिलनाडु के नवनियुक्त मुख्यमंत्री व तमिलागा वेत्री कझगम प्रमुख सी जोसेफ विजय के इर्द-गिर्द घूम रही है. हालिया चुनावी सफलता के बाद जिस तरह टीवीके के नेताओं ने विजय को सीधे प्रधानमंत्री पद का दावेदार घोषित किया, उसने कांग्रेस के भीतर भारी खलबली और नाराजगी पैदा कर दी है. हालांकि इस मुहिम पर पानी डालते हुए कांग्रेस संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने बेहद आक्रामक और तल्ख रुख अपनाते हुए साफ कर दिया है कि विपक्षी गठबंधन यानी इंडिया समूह का चेहरा केवल और केवल राहुल गांधी ही होंगे. कांग्रेस ने दो टूक चेतावनी दे डाली है कि अगर राहुल के चेहरे पर सर्वसम्मति नहीं बनी, तो वे तमिलनाडु सरकार से अपने मंत्री पद छोड़ने और गठबंधन से बाहर आने में देर नहीं करेंगे. इसके बाद इस घमासान पर भाजपा ने चुटकी लेते हुए तीखा तंज कसा है. भाजपा नेताओं ने इसे विपक्ष का मुंगेरीलाल के हसीन सपने करार देते हुए कहा कि वहां अभी से एक अनार सौ बीमार वाली स्थिति हो चुकी है.

पंजाब कांग्रेस में जारी कलह को शांत करेंगे पायलट

चुनाव की दहलीज पर खड़ी पंजाब कांग्रेस की गुटबाजी अब पार्टी के लिए सबसे बड़ा सिरदर्द बन चुकी थी. राजा वड़िंग और चन्नी खेमे के बीच सार्वजनिक रूप से होते आ रहे अहंकारों के टकराव ने जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं का मनोबल तोड़ दिया था. ऐसे नाजुक वक्त में पार्टी हाईकमान ने सचिन पायलट को प्रभारी बनाकर बड़ा दांव खेला है. पायलट के सामने चुनौती सिर्फ दोनों बड़े नेताओं से हाथ मिलवाना नहीं, बल्कि गुटबाजी खत्म कर भीतरघातियों को बाहर का रास्ता दिखाना भी है. पंजाब कांग्रेस के इस फेरबदल पर भाजपा व आप ने चुटकी लेते हुए तीखा तंज कसा है. भाजपा नेताओं का कहना है कि छत्तीसगढ़ में मात खा चुके प्रभारी को हटाकर राजस्थान के असंतुष्ट नेता को पंजाब सौंपना यह साबित करता है कि कांग्रेस के पास चेहरों का अकाल है. वहीं सत्ताधारी आप ने तंज कसते हुए कहा कि कांग्रेस चाहे दिल्ली से कितने भी पायलट बुला ले, पंजाब में उसकी अंदरूनी लड़ाई का विमान क्रैश होना तय है.

सेवा संकल्प के सहारे नब्ज टटोलने की कोशिश

17 सितंबर से भाजपा द्वारा शुरू होने वाले महीने भर के सेवा संकल्प अभियान सिर्फ जनसेवा नहीं है बल्कि कहा जा रहा है कि इसके जरिए पार्टी जनता की नब्ज टटोलने की एक बड़ी संगठनात्मक और राजनीतिक कोशिश करेगी. दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि मोदी के जन्मदिन और उनके मुख्यमंत्री से लेकर प्रधानमंत्री पद तक 25 वर्षों के सफर के उपलक्ष्य में आयोजित हो रहे इस अभियान का असली मकसद आगामी चुनावों से पहले जमीनी स्तर पर सत्ताविरोधी लहर और वोटरों के मूड को भांपना है. चर्चा है कि 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक चलने वाले इस महा-अभियान के दौरान जब लाखों कार्यकर्ता आशीर्वाद का दिया जलाने और विकसित भारत यात्रा के बहाने घर-घर पहुंचेंगे, तो उनका असली काम जनता की शिकायतों, अपेक्षाओं और सरकार के प्रति उनके रुख का डेटा जुटाना होगा. 13 प्रमुख कार्यक्रमों के जरिए पार्टी सीधे महिलाओं, युवाओं और लाभार्थियों की पंचायत से पार्लियामेंट तक की ट्यूनिंग को री-चेक करेगी. इस राष्ट्रव्यापी जनसंपर्क के माध्यम से जो भी फीडबैक मिलेगा, उसी के आधार पर पार्टी अपनी आगामी चुनावी रणनीतियों और टिकट वितरण के समीकरण तय करेगी यानी सेवा ही संगठन के इस बड़े नैरेटिव के सहारे भाजपा चुपचाप 2029 की अपनी जमीन को और भी ज्यादा पुख्ता और धारदार बनाने का प्रयास करेगी.

शिक्षक को सम्मान के साथ समझ भी चाहिए

कृति आरके जैन
शिक्षाविद्

> जिस शिक्षक के हाथों में बच्चों का भविष्य है, उसकी थकान कौन समझता है? पाँच सितंबर की सच्ची गुरु-पूजा फूलों में नहीं, शिक्षक को मनुष्य मानने में है. उसकी समस्या सुनी जाए, गलती पर जवाबदेही और ईमानदार मेहनत पर भरोसा हो. शिक्षक को परीक्षा-परिणाम की मशीन मानना शिक्षा से अन्याय है. दबाव, अविश्वास और कागजी बोझ में जला शिक्षक भविष्य कैसे सँवारेगा? पाँच सितंबर की माला उतर जाती है, जिम्मेदारी नहीं. सवाल फूलों का नहीं, छह सितंबर के व्यवहार का है. पाँच सितंबर तारीख है; असली परीक्षा 364 दिनों में होती है. सच यही है—इस परीक्षा में हम अभी पूरे अंकों के हकदार नहीं हैं.

पाँच सितंबर को स्कूलों में सम्मान का शोर उठता है—दीवारों पर रंग चढ़ते हैं, हाथों में फूल आते हैं और मंच से शिक्षक की महिमा के पुल बाँधे जाते हैं. मगर तालियों के बीच एक सवाल अनसुना रह जाता है—यह शिक्षक दिवस है या हमारी एक दिन की औपचारिक कृतज्ञता? जिस शिक्षक को आज गुरु, मार्गदर्शक और राष्ट्रनिर्माता कहा जाता है, वही कल फाइलों, आदेशों, रजिस्टरों और परीक्षा परिणामों के बोझ तले फिर अकेला खड़ा होगा. फूल मुरझाएँगे, कार्ड फेंक दिए जाएँगे, तस्वीरें पुरानी पड़ जाएँगी; पर पहली घंटी के साथ उसकी जिम्मेदारियाँ फिर सामने होंगी. शिक्षक दिवस की असली सार्थकता तभी है, जब समारोह खत्म होने के बाद भी शिक्षक का सम्मान बना रहे.

कक्षा की चार दीवारों में अलग-अलग परिस्थितियों से जूझते बच्चे बैठे होते हैं—कोई भूखा है, कोई टूटे परिवार का बोझ ढो रहा है, कोई आर्थिक अभाव से सहमा है तो कोई मोबाइल के कारण एकाग्रता खो चुका है. किसी के पास किताब नहीं, किसी के घर पढ़ने की जगह या परिवार का सहयोग नहीं. फिर भी अपेक्षा है कि शिक्षक सबको समान परिणाम दे. यह वैसा है जैसे किसान को जमीन, पानी और मौसम की चिंता किए बिना भरपूर फसल देने को कहा जाए. बच्चे की परिस्थितियों और मन:स्थिति का हिसाब कोई नहीं रखता; परिणाम खराब होते ही सवाल शिक्षक पर आता है. समाज शिक्षक को मशीन मानता है—न थकने वाली, न परेशान होने वाली और न असफल होने वाली.

शिक्षक का अधिकांश श्रम कागज पर दर्ज नहीं होता. अपनी जेब से कॉपियाँ-किताबें खरीदना, गरीब बच्चे की फीस या परीक्षा-फॉर्म भरना, घर पर नि:शुल्क पढ़ाना, अपने खाने का पैसा बचाकर जरूरतमंद विद्यार्थी की मदद करना—ये उसकी नौकरी की शर्तें नहीं हैं. बुखार हो या शरीर टूट रहा हो, कक्षा में खड़ा रहना पड़ता है; छुट्टी भी सवाल खड़े कर देती है. लेकिन परिणाम में दो अंक कम होते ही शिक्षक से जवाब माँगा जाता है. सम्मान का यह कैसा ढंग है—फूल भी उसी के लिए और दोष भी उसी के सिर? उसका असली श्रम रिपोर्टों में नहीं, बच्चे के आत्मविश्वास, टूटे विद्यार्थी की वापसी और गरीब बच्चे की तरक्की में दिखता है. आज शिक्षक को पाठ के साथ बच्चे को भी समझना है. मोबाइल ने उसकी उँगलियों में पूरी दुनिया रख दी है, लेकिन हर सूचना ज्ञान नहीं. ध्यान कुछ सेकंड में भटकता है, तुलना बढ़ती है और घर-परिवार का दबाव बच्चों को बेचैन करता है. फिर भी शिक्षक से अपेक्षा है कि वह कक्षा संभाले, अनुशासन रखे, पाठ्यक्रम पूरा करे और हर बच्चे को टॉपर बनाए. उसे अध्यापक के साथ मित्र, काउंसलर, प्रेरक और कई बार माँ-बाप की भूमिका भी निभानी पड़ती है. चालीस अलग-अलग दिमागों को समझना आसान नहीं. अभिभावक परिणाम, स्कूल अनुशासन और व्यवस्था लक्ष्य चाहती है; इन अपेक्षाओं के बीच शिक्षक की थकान, परेशानी और निजी जिंदगी सबसे पहले छूट जाती है. ईमानदारी का तकाजा है कि शिक्षक को देवता न माना जाए. हर शिक्षक आदर्श नहीं होता. कुछ लापरवाह हैं, कुछ जिम्मेदारी से बचते हैं और कुछ विद्यार्थियों के साथ अन्याय करते हैं. ऐसे मामलों में जवाबदेही होनी चाहिए. लेकिन कुछ खराब उदाहरणों के आधार पर पूरे शिक्षक समुदाय को कटघरे में खड़ा करना भी गलत है. सवाल यह भी होना चाहिए कि शिक्षक को बेहतर बनाने के लिए व्यवस्था ने क्या किया? उसे कैसा प्रशिक्षण मिला? कक्षा में कितने बच्चे हैं? गैर-शैक्षणिक काम कितना है? संसाधन और पढ़ाने की स्वतंत्रता कितनी है? यदि शिक्षक का समय कागजी काम में जाए, कक्षा भीड़ से भरी हो और निर्णय ऊपर से आएँ, तो केवल परिणाम माँगना अपनी जिम्मेदारी से बचना है. अच्छी शिक्षा अच्छे शिक्षक और अच्छी व्यवस्था, दोनों से पैदा होती है. शिक्षक दिवस पर फूलों से अधिक जरूरी वे सवाल हैं, जो शिक्षक का सच सामने लाएँ. क्या उसे समय पर वेतन, पर्याप्त शिक्षण सामग्री मिलती है? क्या वह हर बच्चे पर ध्यान दे सकता है या सरकारी कामों में कक्षा से बाहर भेज दिया जाता है? क्या उसकी समस्या सुनने वाला कोई है? सबसे जरूरी—क्या पाठ पूरा करना ही शिक्षा है? किसी बच्चे की आँखों में आँसू हों तो किताब बंद कर उसे सुनना जरूरी हो सकता है.

फिर दुस्साहस कर सकता है पाकिस्तान

पूर्व चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ (सीडीएस) अनिल चौहान ने आशंका जताई है कि देश की सुरक्षा के लिए पाकिस्तान बड़ी चिंता की वजह बना रहेगा. पाकिस्तान ने सऊदी अरब और तुर्किए के साथ मक्का में रक्षा समझौता किया है, जिसके मुताबिक इनमें से किसी देश पर हमला तीनों देशों पर हमला माना जाएगा और तीनों एक साथ उससे भिड़ेंगे. इस समझौते से पाकिस्तान को अति आत्मविश्वास हो जाएगा और फिर वह भारत के लिए खतरा पैदा कर सकता है. पूर्व सीडीएस की यह भी राय है कि चीन से भारत को दीर्घकालीन व्यापक चुनौती है. दोनों देशों के बीच लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल (एलएसी) को लेकर आपस में स्वीकार्य परिभाषा तय नहीं हो पाई है. युद्ध का तौर तरीका बदलने से भारतीय सेना की चुनौतियां बढ़ गई हैं. अनिल चौहान ने कहा कि चीन के साथ रिश्ते केवल सीमा की समस्या तक ही सीमित नहीं हैं. इस बहुत लंबी सीमा की निगरानी रखते हुए चीन से अन्य क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाया जा सकता है. पूर्व सीडीएस की चेतावनी इसलिए महत्व रखती है क्योंकि पाकिस्तान 1947, 1965 व 1971 की लड़ाई के बाद 1999 में कारगिल युद्ध कर चुका है. 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान भारतीय वायुसेना ने जिस आतंकी प्रशिक्षण अड्डे को ध्वस्त कर दिया था, उसे पाकिस्तान ने फिर से बना लिया है. 'ऑपरेशन सिंदूर' के समय चीन ने पाकिस्तान को ड्रोन, मिसाइल व अन्य हथियार मुहैया कराए थे. अमेरिका का रवैया भी समय-समय पर पाकिस्तान की ओर झुकता नजर आता है. ट्रंप ने फील्ड मार्शल मुनीर की तारीफ की है. पहले भी जब पाकिस्तान को अमेरिका से सहायता मिली थी, उसने उसका इस्तेमाल भारत से लड़ने में किया था. इसलिए पूर्व सीडीएस ने पाकिस्तान की नीयत के बारे में सचेत किया है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

कौन-सी पार्टी कैसा चंदा, हैरत में है हर एक बंदा

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, काले धन को सफेद करने का कोई ऐसा उपाय बताइए कि हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा आए! समझाइए ऐसी तरकीब जिससे खुल जाए नसीब.' हमने कहा, 'यह करिश्मा गुजरात में मौजूद है. वहां हजारों करोड़ का ब्लैक मनी बड़ी सफाई से व्हाइट किया जाता है. फॉर्मूला यह है कि कोई बोगस, बकवास राजनीतिक पार्टी बना लो. इसके लिए न कार्यालय की जरूरत है, न कार्यकर्ताओं की. राजनीतिक पार्टियों पर टैक्स नहीं लगता. इसलिए एक पार्टी बना लीजिए और उसे मिले हुए चंदे के नाम पर करोड़ों का बेहिसाबी काला धन स्वच्छ और सफेद कर लीजिए. प्रधानमंत्री मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के गुजरात में यही गोरखधंधा जोर-शोर से चलता है. वहां 6 कागजी पार्टियों ने अकेले इतना चंदा बटोर लिया, जितना कांग्रेस, सपा, बसपा, माकपा और एनसीपी जैसी राष्ट्रीय पार्टियों को भी नहीं मिला. 2023-24 में 5 प्रमुख राष्ट्रीय स्तर के दलों को 1,480 करोड़ रुपये चंदा मिला जबकि गुजरात

की इन 6 पार्टियों को 1,700 करोड़ रुपये डोनेशन मिला. इन पार्टियों का नाम भी आपने नहीं सुना होगा. ये हैं- आम जनमत पार्टी, सत्यवादी रक्षक पार्टी, स्वतंत्र अभिव्यक्ति पार्टी, न्यू इंडिया यूनाइटेड पार्टी, भारतीय नेशनल जनता पार्टी तथा गरीब कल्याण पार्टी. आबादी के लिहाज से दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र कहलाने वाले भारत में कुकुरमुत्ते की तरह सैकड़ों पार्टियों की पैदावार हो जाती है. यह डेमोक्रेसी की ऐसी-तैसी का प्रत्यक्ष उदाहरण है. विश्व के अन्य देशों में गिनी-चुनी 2 या 3 पार्टियां होती हैं, लेकिन अपने देश में इसकी कोई लिमिट नहीं है. कोई भी ऐरा-गैरा नत्थू खैरा पार्टी बना सकता है. अमेरिका में डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन जैसी 2 पार्टियां हैं जबकि ब्रिटेन में टोरी (अनुदार), लेबर (श्रमिक) और लिबरल (उदार) जैसी 3 पार्टियां हैं. निर्वाचन आयोग के अनुसार भारत में 2800 से अधिक रजिस्टर्ड पार्टियां हैं, जिनका जमीन पर अस्तित्व दिखाई नहीं देता. ब्लैक मनी को व्हाइट करने के लिए इनका उपयोग होता है. इन पार्टियों ने कोई उम्मीदवार खड़ा किया, तो उसकी जमानत जब्त हो जाती है.'

CROSS WORD 12374

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3		■	4		
5			■	6		■	■
	■		■	7			8
	■	9	10	■	■	■	
■	11	■	12	13		■	
14					■	15	
■		■	16		17	■	■
18			■	19			■

किसी राष्ट्र या संस्था का संगठन, संचालन तथा व्यवस्था होती है (कांस्टीट्यूशन) 2. आत्मा, प्राण, प्राणी 3. वधू द्वारा वर को पहनाई जाने वाली माला 4. वह स्थान जहां दो नदियां मिलें, मेल 6. खेमा, शामियाना 8. दुखी, शोकमग्न 10. पोस्त का दाना 11. कदर करने वाला 13. श्मशान 17. नाखून

बाएं से दाएं
1. मृतक को जीवित करने वाली एक कल्पित बूटी 4. दुनिया, जगत, मृत्युलोक 5. छिद्र, बिल, दरार6. संकीर्ण, विस्तार में कम, परेशान 7. लकड़ी का एक प्रकार का तीर, जो फेंकने पर फिर से वापिस आ जाता है (अं.) 9. सौ हजार 12. युद्ध, लड़ाई 14. भारत के एक भूतपूर्व प्रधानमंत्री 15. एशिया का एक प्रसिद्ध देश जहां की दीवार विश्व प्रसिद्ध है 16. अविरल, ठोस 18. प्रार्थना 19. एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गांठ

ऊपर से नीचे
1. वह विधान या कानून जिसके अनुसार

Solution 12373

ज	मा	ई	■	बा	ल	प	न
ल	त	■	मा	त	ह	त	■
च	म	की	ला	■	का	न	न
र	■	क	■	बा	ना	■	क्शा
■	स	र	ह	द	■	अ	■
आ	दी	■	■	रा	क	सि	न
का	■	रा	मा	य	ण	■	के
र	स्सी	■	त्रा	ण	■	शु	ल

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक योजनाओं में सुधार होगा. प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. वर्ष के मध्य में भाईयों से शत्रु पक्ष परास्त होगा. वाहन पशु आदि से लाभ का योग है. आर्थिक क्षेत्र में कमी के कारण योजनायें वाधित होंगी. वाणी में कठोरता तथा क्रोध में वृद्धि होगी. प्रियजनों के कारण हानि हो सकती है. मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का वाहन पशु आदि से लाभ होगा. भाईयों के सहयोग से लाभ प्राप्त होगा. शत्रु पक्ष परास्त होगा. आर्थिक क्षेत्र में कमी के कारण योजनायें वाधित होंगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को वाणी में कठोरता तथा क्रोध में वृद्धि होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को योजनाओं का लाभ मिलेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को नवीन आर्थिक संकटों का सामना करना होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को यात्रा में उड़ाईगीरों से सावधानी रखना हितकर रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील कोमल, भावुक परोपकारी तथा मिलनसार होगा. खेलकूद के प्रति अधिक ध्यान देगा. स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. बचपन में आकस्मिक स्वास्थ्य कष्ट होगा. विद्या में विलंब होगा. माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

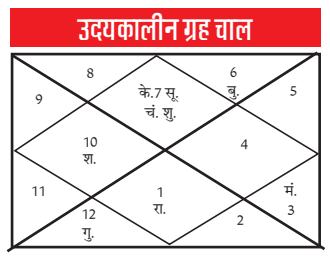

पंचांग

रा.मि. 18 संवत् 2083 भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी बुधवासरे दिन 11/41, आश्लेषा नक्षत्रे दिन 3/35, शिव योगे रात 11/19, वणिज करणे सू.उ. 5/49, सू.अ. 6/11, चन्द्रचार कर्क दिन 3/35 से सिंह, शु.रा. 4,6,7,10,11,2 अ.रा. 5,8,9,12,1,3 शुभांक- 6,8,2.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी को आश्लेषा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी में मंदी होगी, रूई कपास में तेजी होगी. गुड़ खांड़, के भाव धीरे धीरे नरम गरम रहेगें. आज हाजिर मार्केट में बने भाव नीचे गिर सकते हैं. व्यापार का रूख सामान्य रहेगा.
भाग्यांक 2543 है.

मेष- शासकीय कार्यो में यश, मान सम्मान मिलेगा. प्रिय संदेश प्राप्त हो सकता है. दूर दराज की यात्रा में सतर्कता रखें.

वृषभ- धार्मिक कार्यो में खर्च होगा. दूर गये मित्र के संबंध में शुभ समाचार प्राप्त होगा. सावधानी वांछनीय.

मिथुन- सत्कार्यो में खर्च होगा. आर्थिक एवं व्यापारिक कार्यो में लाभ होगा. विरोधी वर्ग सक्रिय रहेगा.

कर्क- पारिवारिक वातारण सुखद एवं अनुकूल रहेगा. मन में विशेष हर्ष रहेगा. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें.

सिंह- आर्थिक कार्यो में सावधानी रखें. जोखिमदारी कार्यो को फिलहाल टालदेना ही उचित होगा.

कन्या- पारिवारिक निकटता रहेगी, सुखद समाचार मिलेगा. किसी कार्य में संलग्नता रहेगी.

तुला- धन मान सम्मान एवं यश कीर्ति में वृद्धि होगी. अचानक नये कार्य आपके उपर आ सकते हैं. सुख रहेगा.

वृश्चिक- व्यर्थ की समस्या का सरलता से समाधान होगा. सहयोग में कमी आयेगी. दूर दराज की यात्रा होगी.

धनु- आपसी तनाव से मानसिक परेशानी होगी. कोई ऐसा कार्य बनेगा. जो आपके लिये हितकर रहेगा.

मकर- किसी बहुप्रतीक्षित कामना की पूर्ति होगी. जीवन साथी का सहयोग रहेगा. सुख का अनुभव रहेगा.

कुम्भ- आपके दायित्वों की पूर्ति होगी. यात्रा में लाभ प्राप्त होगा. पुरूषार्थ बना रहेगा.

मीन- महत्वाकांक्षी योजनाओं की पूर्ति होगी. मनोरंजक प्रवास हो सकता है. सतर्कता व सावधानी वांछनीय है.

SUDOKU 7506

5		9		8	3	2		
	2		4					8
3	8		5	2	6	1		
	7						9	5
9		3	6		8	7		4
2	6						1	
		5	2	7	1		8	6
6					4		7	
		8	9	6		4		2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो, इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7505

8	2	5	3	6	7	9	1	4
4	6	1	8	9	2	3	7	5
3	7	9	1	5	4	6	8	2
1	3	7	4	2	9	5	6	8
6	5	2	7	1	8	4	9	3
9	8	4	6	3	5	1	2	7
2	4	6	9	8	3	7	5	1
5	1	3	2	7	6	8	4	9
7	9	8	5	4	1	2	3	6